© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नीतिशतक की उपादेयता

प्रदीप कुमार
शोधच्छात्र-(जे.आर.एफ.)
संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय कोटवां जमुनीपुर दुबावल इलाहाबाद

शोध आलेख सार- मानव जीवन का उद्देश्य एवं उनकी सार्थकता से लोगों को परिचित कराकर उनके जीवन को सुखमय एवं सुखद बनाया जा सके तथा उनके जीवन की घोर निराशा को और भय को दूर किया जा सके जिससे वह अपनी ऊर्जा को नष्ट न करके समाज और राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर सके। नीतिशतक आधुनिक समय में इसलिए उपयोगी हो गया है जो युवा आज दिक् भ्रमित होकर अपनी ऊर्जा का ह्रास करते हुए कुण्ठा से ग्रसित होकर अपने जीवन को नष्ट कर लेता है उससे बचाने के लिए नीतिशतक वर्तमान समय में उपयोगी हो गया है।

मुख्य शब्द- नीतिशतक , संस्कृत, मानव, जीवन, राष्ट्र निर्माण|

संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं से प्राचीन एवं मानव जीवन को सब प्रकार से उन्नति कराने वाली और प्राणिमात्र के कल्याण के प्रति अग्रसारित करने वाली भाषा है। **"वसुधैव कुटुम्बकम्" सर्वे भवन्तु सुखिनः"** की भावना का विकास करने वाली विश्व कल्याण के लिए संस्कृत काव्यों के द्वारा नीति विषयक श्लोकों के माध्यम से नैतिक एवं आदर्श से युक्त समाज की स्थापना कराने वाली संस्कृत के द्वारा राष्ट्र के महत्व पूर्ण कार्यों का सम्पादन करने के लिए प्रेरित करना है।

'काव्य के द्वारा मनुष्यों में चरित्र निर्माण किया जा सकता है। काव्य यश प्रदान करने वाली, अर्थकारी, व्यवहार ज्ञानदाता और अमंगल हर होते हैं।" तत्काल ही आनन्द की प्राप्ति तथा वनिता की भाँति उपदेशदायिनी होती है।

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृतये कान्ता सम्मितयोपदेशयुजे १॥ काव्य प्रकाश १.२

विधाता के द्वारा सृजित सम्पूर्ण जगत प्रपञ्च से पूर्ण होने के कारण जहाँ पर गमनागमन का बुद्धिपूर्वक विवेचन होता है, उस समय नैतिक ग्रन्थों के अभाव में मनुष्य प्रतिपल दुःख का अनुभव करते हुए ईश्वर की उलाहना में ही अपना जीवन नष्ट कर देता था, कुछ लोगों के द्वारा अपनी दीनता और दुःख से पीड़ित होने पर आकस्मिक मृत्यु को वरण कर लिया जाता, इसलिए

इस विषय पर महर्षियों के द्वारा चिन्तन किया गया कि मानव जीवन को सुखी कैसे रखा जा सकता है परिणामस्वरूप विचार करते हुए प्राचीन काल में विभिन्न ग्रन्थों की रचना किया गया जिसका प्रयोजन सम्यक जीवन की गतिविधियों को उचित प्रक्रिया से सम्पादित करना है। अतः शुक्रनीति-चाणक्य नीति, नीतिशतक प्रभृति अनेक ग्रन्थों का प्रदिपादन किया गया जिसमें सम्पूर्ण व्यवहारिक ज्ञान को समाहित करने का प्रयत्न किया गया है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र मुख्य रूप से न्याय विषयक ग्रन्थ है जिसमें नीति को वर्णित किया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति, मनुस्मृति, नारदादि स्मृति ग्रन्थों को मूल रूप से नीति ग्रन्थों की श्रेणी में ही गणना की जाती है जिसमें आचार-विचार-व्यवहार के विषय में नाना प्रकार से व्यक्त किया गया है। श्री विष्णु शर्मा द्वारा रचित "पञ्चतन्त्रम्" आचार्य पण्डित नारायण लिखित हितोपदेश को भी अनेक ग्रन्थों में नीतिविषयकों के रूप में देखा जा सकता है।

चाणक्य नीति दर्पण अत्यन्त विख्यात है इसमें मङ्गलाचरण के अन्त में ग्रन्थ का प्रयोजन निरूपित करते हुए ग्रन्थकार ने लिखा है कि जो श्रेष्ठ मनुष्य इस शास्त्र को पढ़ता है वह वेदादि शास्त्रों से उक्त कर्तव्य और अकर्तव्य का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करता है।

अधीत्येदम्यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।

धर्मोपदेशविख्यातं कार्याकार्यं शुभाशुभम् २ ॥ चाणक्यनीति दर्पण

यहाँ पर चाणक्य के द्वारा कहा गया है कि हमें लोगों की मङ्गलकामना के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

आचार्य भर्तृहरि ने भी लोक हित की कामना से नीतिशास्त्र की रचना की जिसका नाम नीतिशतक है।

नीतिशतक के विषय में जानने से पूर्व नीति क्या है? यह जानना अति आवश्यक है। इसके विषय में कहा जा सकता है कि मानव कल्याण के लिए समाज को सुव्यवस्थित, सुखी, समृद्ध एवं निरुपद्रव करने के लिए जिस प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है उसे नीति कहते हैं। नीति की परिभाषा करते हुए जयमङ्गला नामक टीका में परम् विद्वान ने लिखा है कि "प्रत्यक्ष-परोक्षाऽनुमान-प्रमाणत्रय-निर्णीत देश- कालानुकूल्यें सति क्रियानुष्ठानं नीतिः ३ ॥ चाणक्य नीति दर्पण

नीतिशतकम्-नीति= नी+ क्तिन (स्त्री0) और शतकम्= शत्+कन् प्रत्यय से नीत्याः शतकम् (षष्ठी तत्0 समास) तम् अधिकृत कृतं पद्यम् इति नीतिशतकम् का निर्माण होता है। नीतिशतकम्+अण् प्रत्यय अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय और लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम् (वा0) से अण् का लोप होकर नीतिशतकम् सिद्ध होता है। ४

महाकवि भर्तृहरि द्वारा रचित नीतिशतकम् क मुक्तक काव्य है। अग्नि पुराण में मुक्तक का लक्षण प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि – मुक्तकं श्लोक एकैकश्चमत्कारक्षमं सताम् । अर्थात् मुक्तक वह काव्य है जिसका प्रत्येक श्लोक स्वतंत्र रूप से अपने-अपने सर्वांगीण अर्थ प्रकाशन में पूर्ण समर्थ होकर सहृदयों के हृदय में चमत्कार का आधायक होता है। इसके एक पद्य का दूसरे पद्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

नीतिशतकम् में कुल १२१ श्लोक है। नीति शतकम् में लोक जीवन के व्यवहार की अनेक सूक्तियाँ तथा उसके मुक्तकों में जिस विषय वस्तु का वर्णन है उसमें आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सर्वजन कल्याण की भावना से उचित दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र का वैयक्तिक – सामाजिक – धार्मिक – आर्थिक – राजनीतिक – सांस्कृतिक गतिविधियों का विचार करके मानव कल्याण किया जा सकता है। नीतिशतक सचमुच ही एक अपूर्व ग्रन्थ है। संसार मेंज कुछ भी नवीन, निष्पाप, निर्मल और मनोहर है, वह सब कत्र संकलन करके , जिस स्थान पर जिसका समावेश करने से उसकी सुन्दरता और निर्मलता और भी वृद्धि किया जा सकता है वह उसी स्थान पर उसी ढंग से बैठाया गया है। "नीतिशतक" में सौ श्लोकों के माध्यम से जो कुछ भी कहा गया है उसकी तुलना अन्य देशों से सौ नीति ग्रन्थ भी नहीं कर सकते। इसके पढ़ने मात्र से मनुष्य एक अच्छा नीतिमान होकर कीर्ति धन और प्रशंसा के अदिकारी होते हैं। नीति शतक में मङ्गलाचरण के पश्चात् मूर्खनिन्दा- विद्वत्प्रशंसा – शौर्य प्रशंसा – द्रव्य प्रशंसा- दुर्जन निन्दा- सुजन प्रशंसा- परोपकार पद्धति- धैर्य प्रशंसा – देव प्रशंसा- कर्म प्रशंसा जैसे विषयों को अत्यधिक गम्भीरता के साथ विचार किया गया है जो आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपादेय हो सकता है। वस्तुतः भर्तृहरि के नीति श्लोकों को सरलता से समझ सकते हैं परन्तु ये गूढ़ रहस्यों से युक्त होने के कारण सामाजिक जीवन को कठोर अनुभवों के द्वारा ज्ञात कर सकते हैं।

आचार्य भर्तृहरि ने भी लोकहित की कामना से नीतिशतक में उस समय की सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि – विद्वान वर्ग ईर्ष्याग्रस्त, राजा लोग गर्वयुक्त , शिक्षित लोग अज्ञानपूर्ण थे, सुभाषित जीर्ण स्थिति में था, फलस्वरूप लोग अनैतिक कृत्यों में रूचि रखते थे। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर यह बात दृष्टिगोचर हो रही है कि आज भी समाज में नैतिकता का पतन होने के कारण संस्कृत भाषा का जो उपयोग हमारे लिए आवश्यक एवं कल्याणकारी है उसका तिरस्कार किया जा रहा है। संस्कृत बोलने वाले विद्वानों की कमी होती जा रही है, संस्कृति और सभ्यता का पतन हो गया है, पाश्चात्य विचार धारा से मानव ग्रसित होकर अपनी देव भाषा वेदादि शास्त्रों से उक्त कर्तव्यों को विस्मृति करता जा रहा है। गुरुजनों के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम विद्यालयी जीवन तक सीमित हो गया है। अतः नीति शतक में उल्लिखित स्लोक का अवलोकन करने पर प्रतीत होता है कि नीतिशतक वर्तमान स्थिति में भी उपादेय हो गयी है।

बौद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः ।

अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुबाषितम् ।। नीति ५

जो मनुष्य अपने अमृतमय उपदेशों से दुष्ट को उचित मार्ग पर लाने का प्रयत्न करता है वह उसी प्रकार अनुचित कार्य करता है जैसे कोमल कमल की डण्डी के सूत से ही मतवाले हाथी को बाँधना चाहता है, अथवा एक बूँद मधु से खारे महासागर को मीठा करना चाहता है। यहाँ पर यह बात ज्ञात होती है कि वर्तमान समय में भी दुष्टों को उपदेश देकर भला व्यक्ति बनाना मूर्खता से खाली नहीं। गधे को उपदेश देने वाला गधा समझा जाता है।

गंगा पहले स्वर्ग से शिव के मस्तक पर गिरी, उनके मस्तक से हिमालय पर्वत पर गिरी वहाँ से पृथ्वी पर गिरी और पृथ्वी से बहती-बहती समुद्र में जा गिरी। इस तरह ऊपर से नीचे गिरना आरम्भ होने पर, गंगा नीचे ही नीचे गिरी और स्वल्प होती गई। गंगा की सी ही दशा उन लोगों की होती है जो विवेक - भ्रष्ट हो जाते हैं। उनका भी अधः पतन गंगा की तरह सौ तरह से होता है परिणामस्वरूप मानव जीवन को प्राप्त करने के पश्चात् ही वह अपने जीवन को नष्ट कर देता है और पुनः निम्न योनियों में चला जाता है जहाँ उसे सत्कर्म करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है। विचार शक्ति ही हमारी सच्ची रक्षिका और मार्ग-प्रदर्शिका है। जो लोग प्रत्येक बुरे और भले काम में इसकी सलाह नहीं लेते, उनकी दुर्गति निश्चित होती है।

शिरः शार्वं स्वर्गात्पतति शिरसस्तत्क्षितिधरं,

महीद्रादुत्तुंगादवनियवनेश्चापि जलधिम्।

अधोऽधो गंगेयं पदमुपगता स्तोकमथवा,

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ६ ।। नीति

जो मनुष्य साहित्य और संगीत – कला से विहीन है, यानी को साहित्य और संगीत का जरा भी ज्ञान नहीं रखता या इनमें अनुराग नहीं रखता, वह बिना पूँछ और सींग का साक्षात् पशु है। वह घास नहीं खाता और जीता है, यह इतर पशुओं का परम सौभाग्य है। मनुष्य का गुणोत्कर्ष विद्या है जिससे वह साधारण रूप से इतर पशुओं से भिन्न समझा जाता है। हमारे यहाँ एक कहावत है कि कोई भी मनुष्य माँ के पेट से बुद्धिमान और विद्वान पैदा नहीं होता। " लूथर महोदय कहते हैं – 'संगीत मनुष्यों को अधिक भव्य, सक्य, विनीत , विनम्र तथा विवेकी और न्यायी बनाता है। '

साहित्य संगीत कला विहिनः

साक्षात्पशुः पुच्छ विषाण हीनः।

तृणं न खादन्नपि जीवमान-

स्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ७ ।। नीति

काव्य शास्त्र विनोद में ही बुद्धिमानों का समय बीतता है। मूर्खों का समय व्यसन, निद्रा और लड़ने झगड़ने में व्यतीत होता है।

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम।

व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ८ ।। नीति

मूर्खों को अपनी मूर्खता छिपाने के लिए ब्रह्मा ने मौन धारण करना बताया है। **बोनार्ड** नामक विद्वान ने कहा है-**"मौन मूर्खों की बुद्धिमत्ता और बुद्धिमानों का एक गुण है। "** वर्तमान समय में भी मूर्खों के द्वारा इस पद्धति का प्रयोग करके विद्वानों की सभा में अपनी मूर्खता को छिपाया जा सकता है।

स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा

विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।

विशेषतः सर्वविदां समाजे,

विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥ ९ ॥ नीति

भर्तृहरि जी ने सुख-दुःख का विवेचन प्रस्तुत करके जीवन के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित किया है, उन्होंने अत्यधिक गम्भीरता के साथ वर्णन करते हुए आधुनिक परिदृश्य में उपयोगी तथा मानव जीवन को सन्मार्ग – कुमार्ग, उचित – अनुचित का भी उल्लेख किया है। मनुष्य, पशु-पक्षियों को एक श्रेणी में स्थापित करते हुए उनके प्रेम की भावना का निरूपण किया है जो मानव जगत व पशु जगत के कल्याण के लिए वर्तमान समय में भी आवश्यक हो गया है। मानव और पशु जाति की सद् वृत्तियों का विश्लेषण करके उनकी मैत्री भाव की आस्था को सम्पादित किया है। आघातकारी व्यंग्यात्मक शैली, दीनता – कृपणता, शोषण असमानता प्रभृति विषयों पर कुठाराघात किया गया है। **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान** इसी से प्रेरित होकर के लिया गया है और **सर्व शिक्षा अभियान** के द्वारा स्त्रियों को भी आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जा रहा है जिससे राष्ट्र निर्माण में आदर्श नागरिक का सहयोग प्राप्त हो सके और राष्ट्र की एकरूपता तथा समानता प्राप्त हो सके। इसमें भाग्य की प्रधानता को प्रतिपादित किया गया है। इस प्रकार नानाविधियों के द्वारा व्यक्ति र समाज के कल्याण का प्रतिपादन भर्तृहरि जी ने अपने ग्रन्थ में किया जो आज भी उपादेय और प्रासंगिक है जो इनके लिखे ग्रन्थ का अध्ययन करता है वह कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण अवश्य कर लेता है।

सम्पूर्ण विश्व में भौतिकतावादी संस्कृति का बोलबाला होता जा रहा है। मानव जीवन का उद्देश्य एवं उनकी सार्थकता से लोगों को परिचित कराकर उनके जीवन को सुखमय एवं सुखद बनाया जा सके तथा उनके जीवन की घोर निराशा को और भय को दूर किया जा सके जिससे वह अपनी ऊर्जा को नष्ट न करके समाज और राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर सके। नीतिशतक आधुनिक समय में इसलिए उपयोगी हो गया है जो युवा आज दिक् भ्रमित होकर अपनी ऊर्जा का ह्रास करते हुए कुण्ठा से ग्रसित होकर अपने जीवन को नष्ट कर लेता है उससे बचाने के लिए नीतिशतक वर्तमान समय में उपयोगी हो गया है। आज सम्पूर्ण विश्व जहाँ विज्ञान के चमत्कारिक परिणामों से दीप्तिमान है वहीं मूल्यों में आये ह्रास से सम्पूर्ण मानवता पर प्रश्न चिन्ह दिखाई देता है। मनुष्य आज लौकिक सुख एवं उपलब्धियों पर ही इतराता है वह अलौकिक सुखों एवं उपलब्धियों से मीलों दूर खड़ा नजर आता

है। परिणामस्वरूप कुकर्मों के द्वारा स्वार्थ परकता से ग्रसित होकर निन्दनीय कार्यों को करता है। इससे बचाने के लिए आधुनिक समय में नीतिशतक उपयोगी हो गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. मम्मटकृत काव्य प्रकाश

२. चाणक्य नीति दर्पणः-१.२/पृष्ठ सं१

३. चाणक्य नीति दर्पणः- प्राक्कथन/ पृष्ठ सं१

४. नीति शतकः- भूमिका/पृष्ठ सं0 क

५. नीति शतकः- भूमिका/पृष्ठ सं0 ५

६. नीति शतकः- २/पृष्ठ सं0 २

७. नीति शतकः- १०/पृष्ठ सं0 १२

८. नीति शतकः- १२/पृष्ठ सं0 १५

९. नीति शतकः-०७/ पृष्ठ सं0 ८